परमपिता परमात्मा से शाश्वत आंतरिक संबंध के लिए साधना अनिवार्य : राजयोगिनी दादी रत्न मोहिनी जी

(रपट : बी के गिरीश, ज्ञानसरोवर ।)

आबू पर्वत,ज्ञान सरोवर, १९ जुलाई २०१३। प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी आज ज्ञानसरोवर के हार्मनी हॉल में ब्रह्माकुमारीज एवं आर ई आर एफ की भगिनी शाखा धार्मिक सेवा प्रभाग द्वारा एक ईश्वर, एक ईश्वरीय परिवार नामक एक अखिल भारतीय सम्मेलन का उद्घाटन दीप प्रज्वलित करके किया गया। इस सर्व धर्म सम्मेलन में देश के विभिन्न भागों से करीब ६०० से भी अधिक प्रभू भक्तों ने हिस्सा लिया।

ब्रह्माकुमारीज संस्थान की संयुक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी रत्न मोहिनी जी ने सम्मेलन को अपना आर्शीवाद दिया। दादी जी ने कहा कि हमारे कल्याणकारी परमपिता परमात्मा की आप सभी प्रिय आत्माएं प्रिय संतान हैं। सभी आत्माएं महान हैं क्योंक हम सभी ईश्वरीय संतान हैं। हम सभी साधना इस लिए करते हैं कि हमारा आंतरिक संबंध परमपिता परमात्मा से सदैव बना रहे। बच्चे तो पिता को याद करते ही रहते हैं मगर इसके लिए कोई साधना करने की जरूरत नहीं होती। साधना करने की जरूरत तब होती है जब पिता का परिचय स्पष्ट रीति से मालूम नहीं होता है। उनकी स्पष्ट पहचान यह है कि वह निराकार है, प्रकाश रूप है और अशरीरी है। हम आत्माएं इस सृष्टि रंग मंच पर अनेक शरीरों के माध्यम से विभिन्न भूमिकाओं का निर्वहन करते हैं। अपने वायदे अनुसार परमात्मा फिर से भारत भूमि पर आये हैं और हमें हमारा सत्य आत्मिक परिचय देकर हमारे अंदर फिर से देवत्व प्रतिष्ठापित कर रहे हैं। अब इस बात को समझ कर हमें अपने जीवन का कल्याण करना है। अपने घर को ही आश्रम बनाना है। जीवन को विकार मुक्त बनाना है। परमात्मा इस कार्य में हमारी मदद कर रहे हैं।

धार्मिक सेवा प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका ब्रह्माकुमारी मनोरमा बहन से इस महासम्मेलन के उद्देश्य को इन शब्दों में प्रकट किया। उन्होंने कहा कि लगात है कि आज प्रलंयकर की दृष्टि वक्र हो गई है। ऐसा ही दृश्य दुनियाँ में नजर आ रहा है। मानव मन को एक सेकेंड के लिए भी सुकून नसीब नहीं है। आज के मानव जीवन की समाप्त प्राय मुस्कान को फिर से उनके चेहरों पर लाने के प्रयास रुप इस सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। संगठन के बल से हम ऐसा कर पाएंगे। विभाजन के नाम पर संसार नर्क बना है। संगठन के बल पर वह फिर से एक बार स्वर्ग बन जाएगा। आने वाला तीन दिन यह बताएगा कि कैसे हम हर कारण को निवारण में एवं हर कैसे को ऐसे में बदल पाएंगे। दिल के दरवाजों को खोलिये और जगत नियंता के इशारों को उसमे प्रविष्ट होने दीजिए।

धार्मिक सेवा प्रभाग के मुख्यालय संयोजक ब्रह्माकुमार रामनाथ भाई ने पधारे हुए अतिथियों के स्वागत में निम्न उद्गार प्रकट किये। कहा कि सारा विश्व इन्हीं त्यागी, तपस्वी, संतों, महंतों , साध्वियों एवं माताओं की आध्यात्मिक शक्ति की वजह से भारत को विश्व का गुरु मानता है। एक वक्त था जब भारत स्वर्ग भूमि थी मगर आज नर्क बन गया है। यह आध्यात्मिक ज्ञान की कमी की वजह से हुआ है। उस आध्यात्मिक ज्ञान को जीवन में धारण करके हम भारत भूमि को एक बार फिर से स्वर्ग समान बना सकते हैं।

परमधाम आश्रम अमरावती से पधारे स्वामी सारस्वता नंद जी महाराज ने अपना शुभकामना संदेश इस सम्मेलन को दिया। कहा कि आज इस अलौकिक आयोजन को देखते हुए हृदय गदगद हो रहा है। संसार को देखन की हमारी जो दृष्टि है हमें उसे सुधारना है। ईश्वर एक है। नाम उनके अलग अलग हैं। इस ज्ञानसरोवर के ज्ञान में गोता लगाकर हम अपने अंदर के अंधकार को दूर करके उस परम सत्य का अनुभव कर सकेंगे। इस दुनियाँ को एक ईश्वरीय परिवार बनाना है वह बना सकेंगे।

हरिद्वार से पधारे महामंडलेश्वर त्यागमूर्ति दर्शन सिंह जी महाराज ने अपनी भावनाएं इन शब्दों में प्रकट किये। कहा मैं पहले भी संस्थान के ऐसे आयोजन में आ चुका हूँ। यहाँ से प्रस्थान के बाद मैंने स्वयं भी विश्व संत सम्मेलन का आयोजन पंजाब में

करवाया। ज्ञानी जैल सिंह जी एवं माननीय बूटा सिंह जी से भी सहयोग मिला। कर्मों के अनुसार हम अपना प्रालब्ध प्राप्त करते हैं। एक नूर तो सब जग उपज्या। सबका पिता वही परमपिता है। इस संस्थान का तो कोई मुकाबला नहीं है। इसकी सफलता हर दिशा में फैल रही है। इनकी पद्धति अनूठी है। इनकी शिक्षाओं को आत्मसात करें।

बलसाड़ से पधारे भाई अब्दुल अजीज जी ने कहा कि मुझे इस संस्थान के कार्यक्रम में शिरकत का मौका देने के लिए इनका शुक्रिया अदा करता हूँ। ईश्वर अल्लाह एक है। मात्र अल्लाह ही पूजा के लायक है। परमात्मा कृपालु एवं दयालु है। हमारे बदन में पहुँचकर चीजें बदबूदार हो जाती हैं। शरीर अशुद्ध है मगर हमारी आत्माएं पावन हैं। वह अल्लाह सभी विशेषताओं से संपन्न है। बाकी कोई नहीं। हम सभी उन्हीं की संतान हैं। हमें प्रेम से मिलजुल कर रहना है।

कर्नाटक से पधारे भाई वसवमूर्ति स्वामी जी ने कहा कि सभी प्राणी संकट में हैं। संसार के सारे मानव की रक्षा की बात आवश्यक है। ईश्वरीय विश्वविद्यालय अति उत्म सेवा कर रही है। हम इनके साथ हैं। हर प्रकार से। इसका लाभ भारत के हर एक कोने में फैलना चाहिए।

नागपुर से पधारे फादर फालसेन ने कहा कि इस विश्वविद्यालय की ओर से इस आध्यात्मिक सम्मेलन में भाग लेकर मैं काफी प्रसन्न हूँ। हमे इसका लाभ अवश्य मिलेगा। यह विषय सामयिक है। हम सब यहाँ एक आध्यात्मिक उल्लास एवं चेतना से सराबोर होंगे ऐसा विश्वास है।

बीदर से पधारे ज्ञानी दरबार सिंह जी ने कहा कि यहाँ की व्यवस्था की क्या बात करूं? यह कितना सुंदर है। हमें परमात्मा की गोद किस प्रकार प्राप्त होगी? माँ की बात पर विश्वास करके बुराईयों को छोड़ने से पिता की गोद मिलेगी। माताएं हैं ये ब्रह्माकुमारी बहनें। इनकी बातों को समझकर जीवन को श्रेष्ठ बनाओ।

कुमारी अनन्या ने स्वागतार्थ तांडव नृत्य किया। महादेव के इस तांडव नृत्य से सभी मंचासीन अतिथि रोमांचित हो गये। मंच संचालिका मुंबई की ब्रह्माकुमारी कुंती बहन ने अति उत्म रीति से मंच का संचालन किया। धन्यवाद ज्ञापन के साथ यह कार्यक्रम संपन्न हुआ।